VISION IAS

www.visionias.in

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1401)

Name of Candidate	Mohan Lal		
Medium Eng./Hindi	Hindi	Registration Number	356415
Center		Date	13-NOV-20

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	10	
5	10	
6	10	
7	10	
8	10	
9	10	
10	10	
11	15	
12	15	
13	15	
14	15	
15	15	
16	15	
17	15	
18	15	
19	15	
20	15	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **ENGLISH & HINDI**
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

16-B, 2nd Floor, Above National Trust Building, Bada Bazar Marg, Old Rajinder Nagar, Delhi-110060

Plot No. 857, 1st Floor, Banda Bahadur Marg (Opp Punjab & Sindh Bank), Dr. Mukherjee Nagar

Scanned with CamScanner

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Scanned with CamScanner

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. Give an account of the contributions made by Indians to the field of mathematics in ancient and medieval times. **(150 words) 10**

प्राचीन एवं मध्य काल में गणित के क्षेत्र में भारतीयों के योगदानों का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

प्राचीन भारतीय विज्ञान के क्षेत्र को विरासत माना जाता है, जिसमें अनेक वैज्ञानिकों जैसे - आर्यभट्ट, ~~शुभ~~ सुश्रुत, चरक आदि ने प्रशंसनीय योगदान दिया।

इस संबंध में गणित में ~~क्षेत्र~~ योगदान निम्न है -

<u>प्राचीन काल में गणित के क्षेत्र में भारतीयों का योगदान</u> :-

→ आर्यभट्ट ने दशमलव प्रणाली शुरू की (बेसिक गणित का विकास)

→ त्रिकोणमितीय गणित का विकास

→ जीरो की खोज (ब्रह्मगुप्त) द्वारा

→ खगोलशास्त्र में भी गणितीय सूत्रों का प्रयोग आदि

<u>मध्य काल में</u> :-

→ रेखागणित जैसे विषयों पर गणितज्ञों का ध्यान

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ अलग-अलग सूत्रों के खोज द्वारा सामान्य गणित का विकास आदि

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचीनकाल व मध्यकाल में भारतीयों का गणित के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है जिसका प्रमुख कारण यहाँ नालंदा, विक्रमशिला तथा तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का होना था।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. Female poet-saints played a significant role in the bhakti movement. Discuss. **(150 words) 10**

महिला संत कवियों ने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चर्चा कीजिए।

पारंपरिक वैदिक संस्कृत आधारित पूजा पाठ के विपरित स्थानीय लोगों द्वारा स्थानीय भाषा में अपने ईश्वर (कृष्ण, विष्णु या ब्रह्मा) के प्रति आस्था व भजनों को भक्ति आंदोलन के रूप माना जाता है।

भक्ति आंदोलन की शुरुआत 12वीं-13वीं सदी के आस-पास उत्तर भारत व दक्षिण भारत में इससे भी पहले अलवार व नयनार संतो ने की थी।

भक्ति आंदोलन में महिला संत कवियो की भूमिका :-

→ अरूण्डेल जैसी अलवार संत ~~कवयित्रियों~~ ने स्थानीय लोगों को ~~शैव~~ विष्णु के प्रति भजनों, आस्थाओं आदि के विकास में योगदान दिया।

→ उत्तर भारत की मीराबाई ने कृष्ण-लीला प्रेम भक्ति का मार्ग अपनाया। तथा मोह-माया व परिवार सन्यास द्वारा भक्ति आंदोलन को आगे बढाया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसके अतिरिक्त पूर्व भारत में भी अनेक महिला संत कवियों ने भक्ति भक्ति परंपरा को आगे बढ़ाया।

भक्ति आंदोलन के जन-जन तक प्रसार तथा महिलाओं की भागीदारी इन कवयित्रियों के कारण और अधिक बढ़ी।

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. Give an account of Jain architecture that developed in various parts of the country during different periods. **(150 words) 10**

देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न अवधियों के दौरान विकसित जैन स्थापत्य कला का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

स्थापत्य कला का उद्भव करीब दूसरी सदी ईसा पूर्व में अपने ज़ोरों पर था जब अजंता की गुफाओं को निर्मित किया गया।

जैन धर्म के उद्भव ने स्थापत्य कला के महत्व को और अधिक बढ़ाया।

<u>जैन स्थापत्य कला का विकास</u> :-

अवधि

गुप्तकालीन पूर्व (मौर्योत्तर काल) | गुप्तकालीन समय | उत्तरगुप्त कालीन

पश्चिमी दक्षिणी भारत में गुप्तकाल के दौरान जैन स्थापत्य कला :-

→ एलोरा की गुफाओं में जैन भिक्षुओं हेतु विहारों का निर्माण (पहाड़ी काटकर बनाया गया)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4.

→ दक्षिण भारत में सीतनवासल की गुफाएं

→ मंदिर स्थापत्य कला में योगदान (कैलाशनाथ मंदिर - नवीं सदी का)

→ चंद्रगुप्त मौर्य जैसे शासकों ने भी जैन धर्म अपनाकर इसकी स्थापत्य कला को आगे बढ़ाया

Scanned with CamScanner

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. Curzon's domestic and foreign policies were motivated by the urge to further strengthen the British position in India. Discuss. **(150 words) 10**

कर्जन की घरेलू एवं विदेशी नीतियाँ, भारत में अंग्रेजों की स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता से प्रेरित थीं। चर्चा कीजिए।

कर्जन वॉयसराय के रूप में 1899 – 1905 तक भारत में रहा। कर्जन रेडिकलात्मक तथा अंग्रेज सर्वोसत्ता का कट्टर पक्षधर था।

कर्जन की नीतियाँ विदेशी व भारतीय दोनों भारत में अंग्रेजों की स्थिति को अधिक सुदृढ़ करने पर प्रेरित थी।

कर्जन की प्रमुख घरेलू प्रतिक्रियावादी नीतियाँ:

→ कलकत्ता कॉपरेशन एक्ट द्वारा (1899) भारतीयों की संख्या कम करना (1899)

→ विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा (1904) भारतीय विश्वविद्यालयों पर अधिक सरकारी नियंत्रण।

→ भारतीय सुरक्षा अधिनियम

→ एंड्रयु फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग का गठन।

विदेशी नीतियाँ :-

→ तिब्बत पर आक्रमण तथा इसके बाद यांगहुस्बैंड मिशन की संधि द्वारा अंग्रेजों का तिब्बत तक प्रसार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ रूस को भारत में प्रवेश रोकने हेतु पड़ोसी देशों पर वर्चस्व हेतु आक्रमण आदि।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि लॉर्ड कर्जन की ये नीतियाँ ब्रिटिश वर्चस्व को मजबूत करने तथा भारत के आर्थिक आर्थिक शोषण को बढ़ाने पर आधारित थी।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. The Communal Award was seen not only as an attack on national unity but also inimical to the interests of the depressed classes. Discuss. Also, highlight how the Poona Pact sought to address some concerns in this regard. **(150 words) 10**

सांप्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) को न केवल राष्ट्रीय एकता पर प्रहार के रूप में देखा गया, अपितु यह दलित वर्गों के हितों के भी प्रतिकूल था। चर्चा कीजिए। साथ ही, रेखांकित कीजिए कि किस प्रकार पूना पैक्ट ने इस संबंध में कुछ चिंताओं का समाधान करने का प्रयास किया।

कम्युनल अवार्ड (1932) की घोषणा ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने की थी। इसके अनुसार हिंदुओं में दलित वर्ग को भी पृथक् निर्वाचन व्यवस्था के तहत लाया गया।

कम्युनल अवार्ड राष्ट्रीय एकता तथा दलित वर्गों के हितों के प्रति निम्न रूप से प्रतिकूल था :-

→ एकता को कमजोर कर तथा ब्रिटिश की बांटो व राज करो नीति का अगला कदम था

→ हिंदुओं में विभाजन द्वारा ब्रिटिश विभाजन की नीति द्वारा आपसी टकराव बढ़ाना।

→ यह अस्पृश्यता को और अधिक बढ़ाता (विभाजन की नीति में)

→ वर्गों के आधार पर क्षेत्रों का विभाजन आदि

Don't write anything in this margin

साम्प्रदायिक अवार्ड के विरुद्ध महात्मा गांधी के आमरण अनशन के बाद पूना की यरवदा जेल में अंबेडकर-गांधी समझौता हुआ, जिसे पूना पैक्ट कहा जाता है।

पूना पैक्ट द्वारा समाधान के प्रयास :-

→ पृथक निर्वाचन व्यवस्था को रद्द कर सार्वजनिक निर्वाचन व्यवस्था पर सहमति

→ दलित वर्गों हेतु विधायिकाओं में नियत सीटें हेतु आरक्षण की व्यवस्था।

→ ये सीटें पृथक नि॰ व्यवस्था से संख्या में अधिक थी।

हालांकि इससे उच्च दलित वर्गों का राजनीति में दबदबा होना स्वाभाविक था, फिर भी गांधीजी के प्रयासों ने इस विभाजनकारी नीति को परिवर्तित करने में सफलता हासिल की। अंततः पूना पैक्ट को सरकार ने स्वीकृत कर दिया।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. Given the important role played by the press in the formation and propagation of nationalist ideology, the British sought to curb the freedom of the press at various points during the freedom movement. Elaborate.

(150 words) 10

राष्ट्रवादी विचारधारा के निर्माण एवं प्रचार-प्रसार में प्रेस द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, अंग्रेजों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई अवसरों पर प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। सविस्तार वर्णन कीजिए।

विचारों, अभिव्यक्ति तथा कल्पनाओं के प्रसार में प्रेस की संचारात्मक भूमिका अति महत्वपूर्ण है। राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार हेतु प्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रवादी विचारधारा के निर्माण व प्रसार में प्रेस की भूमिका :-

→ समान विचारधारा वाले जन-समूह को जोड़ना

→ एक जगह की घटना को अन्य जगह प्रसारित कर संवेदना व करुणा द्वारा एकता स्थापित करना

→ राष्ट्रीय नेताओं के रूप में एक सुदृढ़ मंच की स्थापना आदि।

हालांकि अंग्रेजों द्वारा प्रेस नियंत्रण पर निम्न तरह से प्रतिबंध लगाए गए :-

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (जिसने द्वारा देशी भाषायी प्रेस पर प्रतिबंध 1876-77)

→ भारतीय प्रेस अधिनियम 1907-08 के तहत स्वराज्य आंदोलन को कुचलने हेतु

→ असहयोग आंदोलन के दौरान प्रेस पर प्रतिबंध

→ सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान प्रतिबंध आदि।

इस प्रकार से ब्रिटिश सरकार ने भारतीय प्रेस को प्रतिबंधित करने तथा राष्ट्रवाद की विचारधारा दबाने हेतु कई लेखकों व संपादकों को गिरफ्तार कर कठोर सजाएं दी गयी जैसे - तिलक को 8 वर्ष की सजा।

Scanned with CamScanner

7. The peasant awakening seen in 1930s in India was largely a result of the combination of particular economic and political developments of that period. Discuss. **(150 words) 10**

भारत में 1930 के दशक में अवलोकित कृषक जागरूकता, व्यापक तौर पर उस अवधि की विशिष्ट आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रमों के सम्मिश्रण का परिणाम थी। चर्चा कीजिए।

19वीं सदी तथा 20वीं सदी के शुरू के दशकों में कृषक आंदोलन मुख्यतया स्थानीय मांगों व कारकों तक ही सीमित थे। एकीकृत की भावना तथा राष्ट्रवाद की विचारधारा से अपरिचित थे।

प्रमुख आर्थिक घटनाएँ जिन्होंने कृषक जागरूकता को बढ़ाया :-

→ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आयी आर्थिक महामंदी ने किसान वर्ग को बुरी तरह प्रभावित किया। (महँगाई में कई गुना वृद्धि)

→ कृषक उपज का निम्न दर पर बेचने की मजबूरीता

→ भारतीय कृषि निर्यात का एकाएक रुक जाना

राजनीतिक घटनाएँ :-

→ इसी समय सविनय अवज्ञा आंदोलन में गांधीजी किसानों को आंदोलन की मुख्य प्रेरक बल

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

बनाने के प्रयास कर रहे थे।

→ 1936 में अखिल भारतीय किसान कांग्रेस (स्वामी ~~सहजान~~ श्रद्धानंद द्वारा) का गठन कर संगठित करने का प्रयास

→ राजनीतिक प्रबुद्धजीवियों द्वारा राजनीतिक शिक्षा का किसानों तक प्रसार आदि।

इस तरह से 1930 के दशक में राष्ट्रीय आंदोलन की सक्रियता के कारण कृषक समुदाय में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रसार हुआ, जिसने फलतः स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान दिया।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ न लिखें)

8. Though the upsurge by the ratings of the Royal Indian Navy was suppressed, it is seen as an event which marked the end of British rule in India. Discuss. (150 words) 10

यद्यपि, रॉयल इंडियन नेवी के नाविकों के विद्रोह को दबा दिया गया था, तथापि इसे एक ऐसी घटना के रूप में देखा जाता है जो भारत में ब्रिटिश शासन के अंत का प्रतीक था। चर्चा कीजिए।

फरवरी 1946 तक अनेक घटनाओं जैसे- भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) के सैनिकों व अधिकारियों पर मुकदमा, भारतीय तथा ब्रिटिश सैनिकों के बीच नस्लीय भेदभाव, वेतन आधारित भेदभाव आदि ने एक पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।

फरवरी 1946 में एकमात्र ब्रिटिश की पक्षधारिता के रूप में बची सेना ने भी विद्रोह कर दिया।

रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह का ब्रिटिश शासन का अंत के रूप में प्रतीक :-

→ चूंकि 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान नौकरशाही पहले ही हिम्मत हार चुकी थी, अंततः सैनिकों में विद्रोह ने ब्रिटिश अंत को मार्ग प्रशस्त किया।

→ इस विद्रोह का सभी राजनीतिक प्रवृत्तियों ने सहयोग दिया

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हालांकि महात्मा गांधी व कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर समर्थन नहीं दिया।

→ इस विद्रोह ने अन्य सैनिकों की भावनाओं को उत्तेजित किया।

हालांकि उपरोक्त कदमों के बावजूद इस विद्रोह को अंग्रेजों द्वारा दबा दिया गया परन्तु सैनिकों की एकता (हालांकि मद्रास सैनिकों ने सहायता नहीं की) ने ब्रिटिश सरकार को और अधिक कमजोर कर भारतीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

Scanned with CamScanner

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. The story of India's freedom struggle cannot be complete without recognizing the role that many leaders of North East India played during the time. Discuss.

(150 words) 10

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी उस दौर में उत्तर-पूर्व भारत के अनेक नेताओं द्वारा निभाई गई भूमिका को मान्यता प्रदान किए बिना पूर्ण नहीं हो सकती है। चर्चा कीजिए।

स्वतंत्रता संघर्ष किसी स्थान आधारित न होकर अखिल भारतीय स्तर आधारित था। जिसमें उत्तर भारत व पश्चिमी भारत में खुदाई-खिदमतगार, तिलक जैसे नेता थे तो दक्षिणी व मध्य तथा पूर्वी भारत में वी. चिदम्बरम पिल्लई, विपिनचन्द्र पाल, बोस जैसे नेता था।

उत्तर-पूर्वी भारत के नेताओं की स्वतंत्रता संघर्ष में भूमिका :-

→ रानी गैडिन्ल्यू (नागालैण्ड की) ने बचपन से कांग्रेस जॉइन कर स्वतंत्रता संघर्ष हेतु स्थानीय योगदान दिया

→ उत्तर-पूर्वी भारत के संगठनों की ब्रिटिश विरोधी भावनाओं का प्रसार

Scanned with CamScanner

Don't write anything in this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उत्तर पूर्वी भारत के नेताओं ने INC तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रसक्रीय भूमिका निभाई जिसके फलस्वरूप उत्तर-पूर्वी भारत स्वतंत्रता पश्चात् भारत का अभिन्न हिस्सा बना रहा।

Scanned with CamScanner

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. Giving an account of revolutionary activities carried outside India to get freedom from the British colonial rule, highlight the limitations of such activities. **(150 words) 10**

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु भारत से बाहर की गई क्रांतिकारी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए, इस प्रकार की गतिविधियों की सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों के प्रत्युत्तर में बंगभंग विरोधी तथा स्वराज्य आंदोलन के दमन के बाद क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रथम चरण की शुरुआत हुई।

भारत से बाहर से की गई क्रांतिकारी गतिविधियाँ :-

प्रथम चरण (1905–1914) :-

→ सेन फ्रांसिस्को में लाला हरदयाल के नेतृत्व में गदर दल की स्थापना

→ लंदन में इंडिया हाउस की स्थापना (सोशियोलोजिस्ट का प्रकाशन)

→ वीर सावरकर द्वारा लंदन में साप्ताहिक पत्रिका 'गदर' का प्रकाशन तथा स्वतंत्रता संग्राम-1857 का प्रकाशन और।

द्वितीय चरण (1922–1930) :-

(असहयोग आंदोलन के बाद)

→ सिंगापुर में विद्रोह
→ कनाडा, मध्य एशिया आदि देशों में कुछ क्रांतिकारी कदम आदि।

इन गतिविधियों की सीमाएं :-

→ जन-आधार अति सीमित था।
→ एकरूपता का अभाव
→ नीतियों की दूरदर्शिता न होने से संगठनात्मक कमजोरी
→ स्थानीय मुद्दों पर आधारित
→ भारतीय जन-समूह का भिन्न सहयोग।

ज्ञातव्य है कि इन क्रांतिकारी गतिविधियों से स्वतंत्रता हासिल करना संभव नहीं था परन्तु भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के निम्न सक्रिय काल (स्वराज आंदोलन के पश्चात् तथा असहयोग आं. के पश्चात्) में राजनीतिक चेतना को जारी रखा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

11. The architecture of Pallava kingdom has a distinctive style comprising of cave temples, monolithic temples and structural temples. Elaborate with examples. (250 words) 15

पल्लव स्थापत्य कला एक विशिष्ट शैली है, जिसमें गुहा मंदिर, एकाश्म मंदिर और संरचनात्मक मंदिर सम्मिलित हैं। उदाहरण सहित सविस्तार वर्णन कीजिए।

पल्लव राजवंश की समयावधि करीब 6 वीं सदी से मानी जाती है। पल्लवों ने द्रविड़ स्थापत्य कला के विकास को जन्म दिया।

प्रमुख स्थापत्य कला के रूप में :-

गुहा मंदिर :- → गुफाओं को काटकर मंदिरों का निर्माण करने की प्रथा

→ 7 वीं सदी का कैलाशनाथ मंदिर

→ इनमें दीवारों की नक्काशी भी की गई थी।

एकाश्म मंदिर :- इन मंदिरों को एक प्रस्तर की संरचना पर निर्मित किया जाता था।

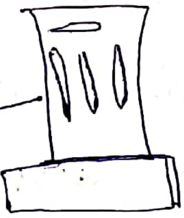

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

संरचनात्मक मंदिर :- इसके अंतर्गत विकसित द्रविड़ शैली आधारित मंदिरों का निर्माण किया गया।
इसमें निम्न संरचनाएं शामिल है -

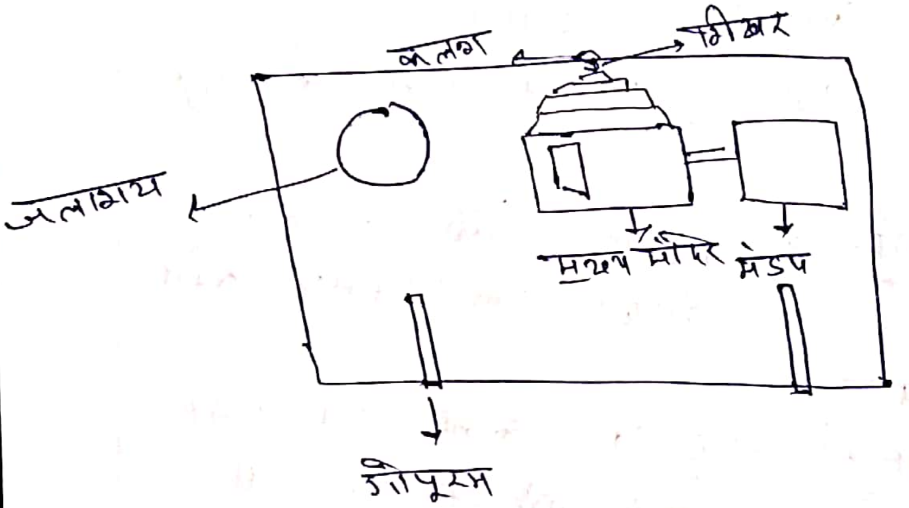

अतः कहा जा सकता है कि पल्लव स्थापत्य कला एक विशिष्ट विभिन्न गुणों के संयोजन का परिणाम है जिसने चोल कला हेतु पूर्वगामी की तरह कार्य किया।

12. Though the contact between the Greeks and ancient Indians was for a brief period, its impact was fairly wide in range. Elaborate. (250 words) 15

यद्यपि यूनानियों एवं प्राचीन भारतीयों के मध्य एक संक्षिप्त अवधि तक ही संपर्क रहा था, तथापि इसका प्रभाव काफी व्यापक था। सविस्तार वर्णन कीजिए।

प्राचीन काल (तीसरी शताब्दी से पूर्व) कुछ समय के लिए यूनानियों (अलेक्सेंडर) ने पश्चिमी भारत पर आक्रमण कर अपना वर्चस्व स्थापित किया। हालांकि फिर हूणों, शकों तथा कुषाणों द्वारा इनके विस्तार को रोक दिया गया।

यूनानियों का प्रभाव :-

→ विज्ञान तथा चिकित्सा क्षेत्र में → यूनानी पद्धति आधारित पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली का विकास

→ राज्य की सेना हेतु घुड़सवारों का वर्चस्व एवं मध्य एशिया से घोड़ों के आयात में वृद्धि

→ कृषि के क्षेत्र में यूनानी तकनीकी का प्रयोग।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ न लिखें)

→ पारंपरिक भारतीय माप-तौल प्रणाली भी यूनान की प्रणाली पर आधारित थी।

Scanned with CamScanner

margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

13. The subject of Indian folk art paintings is as diverse as the Indian cultural milieu itself. Elucidate. (250 words) 15

भारतीय लोक चित्रकला का विषय उतना ही विविधतापूर्ण है जितना कि स्वयं भारतीय सांस्कृतिक परिवेश। स्पष्ट कीजिए।

भीमबेटका गुफाओं की चित्रकला को प्राचीनतम चित्रकला माना जाता है जिसमें सांस्कृतिक परिवेश जैसे - पशुचारण, मनुष्य आदि को दिखाया गया है।

भारतीय लोक चित्रकला का विषय :-

→ विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के चित्रण हेतु मधुबनी लोक चित्रकला - बिहार। यह 1000 वर्ष से अधिक पुरानी है।

→ कलमकारी चित्रकला - आन्ध्रप्रदेश। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों व धार्मिक आयोजनों का रूपांकन होता है।

→ वारली चित्रकला - महाराष्ट्र (गुजरात) इसमें तारानुमी संरचनाओं का निर्माण, जिसे प्राचीन काल का माना जाता है।

इन सभी लोक चित्रकलाओं में भारतीय सांस्कृतिक परिवेश के तत्वों को रूपांकित किया जाता है।
जैसे- पारिवारिक संबंधों, पूजा-अर्चना, इत्यादि।

प्राचीन भारतीय परिवेश की संयुक्त परिवार प्रणाली की विशेषताओं का भी इन पेंटिंग्स में शामिल होना देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

VISION IAS™

Don't write anything in this margin
(इस भाग में कुछ मत लिखें)

14. The short-sightedness of Congress, Jinnah's ambitions and British amorality – all played their part in the partition of India. Discuss. (250 words) 15

कांग्रेस की अदूरदर्शिता, जिन्ना की महत्वाकांक्षाएं एवं अंग्रेजों की नैतिकहीनता - सभी ने भारत के विभाजन में अपनी भूमिका निभाई। चर्चा कीजिए।

मुहम्मद इकबाल द्वारा पाकिस्तान के विचार तथा 1940 के लाहौर प्रस्ताव ने मुस्लिम जन समूहों में अलगाववाद की भावना को पहले ही जाग्रत कर दिया था।

भारत के विभाजन में विभिन्न समूहों की भूमिका :-

(i) कांग्रेस की अदूरदर्शिता :-

→ कांग्रेस की अदूरदर्शिता ने द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् मुस्लिम लीग हेतु अपने जनाधार बढ़ाने में सहायक भूमिका निभाई।

→ कुछ मुस्लिम नेताओं जैसे- अबुल कलाम, हसरत मुहानी आदि के ~~कारण~~ कांग्रेस में होने के कारण मुस्लिम लीग को कम आंकना।

Scanned with CamScanner

(ii) जिन्ना की महत्वकांक्षाएँ :-

→ जिन्ना को पाकिस्तान का जनक माना जाता है। जिन्ना ने क्रिप्स मिशन (1942), वैवेल प्लान (1945), कैबिनेट मिशन (1946) को इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया कि इसमें पृथक पाकिस्तान का कोई उल्लेख नहीं है।

(iii) अंग्रेजों की नीति-भ्रष्टता :-

→ अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन (1905) से ही हिंदु-मुस्लिम हेतु बाँटो व राज करो नीति अपनाई

→ सांप्रदायिकता को ब्रिटिश द्वारा स्वीकृति देने से पाकिस्तान की नींव अधिक मजबूत हुई।

→ माउंटबेटन द्वारा किसी भी हालत में भारत को त्वरित सत्ता हस्तांतरण की नीति ने अंततः पाकिस्तान के निर्माण को प्रत्यक्ष रूप प्रदान किया।

अंतिम रूप से माउंटबेटन योजना द्वारा भारत व पाकिस्तान दो पृथक डोमिनियनों का निर्माण हुआ।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. Given the specific nature and character of the British colonial state, the Indian national movement gradually evolved its strategy and tactics over the course of time. Analyse. **(250 words) 15**

ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य की विशिष्ट प्रकृति एवं चरित्र को देखते हुए, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने समय के साथ उत्तरोत्तर अपनी रणनीति एवं कार्यनीति का विकास किया। विश्लेषण कीजिए।

ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य ने समय व परिस्थिति के अनुसार अपनी नीतियों में परिवर्तन किया। जैसे- सहायक संधि, बांटो और राज करो, अधिग्रहण का सिद्धांत, आर्थिक शोषण व धन संप्रेषण का सिद्धांत आदि।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रणनीति तथा कार्यनीति :-

(a) प्रारंभिक चरण जिसे उदारवादी चरण (1885-1905) तक कहा गया, में प्रार्थना-पत्र, याचनाओं आदि द्वारा संवैधानिक सुधारों का प्रयास

(b) द्वितीय चरण जिसे नरमवाद की जगह गरमदल (1905-1917) तक माना गया, स्वराज्य हेतु गैर-संवैधानिक तकनीकी का प्रयोग। जैसे- धरने प्रदर्शन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार (स्वराज आंदोल

Don't write anything in this margin
(इस भाग में कुछ भी न लिखें)

के समय)

(c) कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों के प्रत्युत्तर में क्रांतिकारी आंतकवाद के प्रथम चरण की शुरुआत (गदर दल प्रमुख था - 1912-13)

(d) पूंजीवाद आधारित शोषण के विरुद्ध INC ने भी 1920 में संवैधानिक रूप से कार्यों की बजाय शांतिपूर्ण आधार को लक्ष्य निर्धारित किया।

(e) असहयोग आंदोलन के पश्चात् ब्रिटेन की शोषण व बांटो व राज करो की नीति के विरुद्ध रचनात्मक कार्यों जैसे- अस्पृश्यता उन्मूलन पर जोर

(f) सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत सरकार अधि० 1935, मॉर्ले-मिंटो सुधार 1909, चेम्सफोर्ड सुधार 1919 इत्यादि के दमनात्मक उपबंधों एवं भारत छोड़ो आंदोलन द्वारा सशक्त जन समूह ने आगे स्तर की रणनीति तैयार की।

Scanned with CamScanner

अतः माउंटबेटन योजना (1947) के द्वारा भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई।

उल्लेखनीय है कि इस समयकाल में ब्रिटेन की नीतियों जैसे- भारत शासन अधि० 1909 (मुस्लिम पृथक निर्वाचन), 1919 इत्यादि के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने पूर्ण शक्ति के साथ विरोध जारी रखा।

VISION IAS™

16. The foundation of the Indian National Congress in 1885 was not a sudden accident but the culmination of a long process of political awakening. Comment. (250 words) 15

वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कोई अप्रत्याशित घटना नहीं थी, अपितु यह राजनीतिक चेतना की एक लंबी प्रक्रिया की पराकाष्ठा थी। टिप्पणी कीजिए।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना 1885 में A.O. ह्यूम द्वारा की गई थी। हालांकि INC के गठन से पूर्व भी अनेक संस्थाने थी जो राजनीतिक चेतना में संलग्न थी।

1885 से पूर्ववर्ती राजनीतिक संस्थाएं:

→ 1838 में लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी
→ 1866 में दादाभाई नौरोजी द्वारा लंदन में ईस्ट इंडियन एसोसिएशन की स्थापना
→ कलकत्ता ब्रिटिश एसोसिएशन
→ मद्रास व बंबई में भी कलकत्ता एसोसिएशन की तरह एसोसिएशन की स्थापना
→ पूना सार्वजनिक सभा (1874)
→ सत्येन्द्रनाथ तथा आनंद मोहन बोस द्वारा 1876 में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना
→ मद्रास महाजन सभा इत्यादि।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपरोक्त संगठनों ने राजनीतिक शिक्षा उपलब्धि तथा अधिकारों के प्रयोग हेतु राजनीतिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया।

आनंदमोहन बोस, सत्येन्द्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, M.G. रानाडे जैसे अनेक उदारवादी नेताओं के प्रयासों से एक संगठन के विचार को मूर्तरूप देने हेतु विचार किया गया।

अंततः 1885 में INC की स्थापना के साथ एक अखिल भारतीय संगठन की नींव रखी गई जो पूर्ववर्ती विभिन्न संगठनों का ही विस्तार था न कि कोई अप्रत्याशित घटना।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

17. Despite the Cripps' proposal being a step ahead of the August Offer, it was rejected by both the Congress and the Muslim League albeit for different reasons. Discuss. **(250 words) 15**

अगस्त प्रस्ताव से एक कदम आगे होने के बावजूद क्रिप्स प्रस्ताव को कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा अलग-अलग कारणों से अस्वीकार कर दिया गया। चर्चा कीजिए।

द्वितीय विश्व युद्ध (1939 ई०) के शुरु होने के पश्चात् मित्र राष्ट्रों के दबाव से न चाहते हुए भी ब्रिटिश सरकारें द्वारा भारतीय सहयोग हेतु बाध्य हो गया।।

इस संबंध में 1940 में अगस्त प्रस्ताव द्वारा वॉयसराय लिन-लिथगो ने घोषणा की कि युद्ध पश्चात ~~डोमिनियन~~ संवैधानिक सुधारों हेतु भारतीयों से युक्त एक सभा बनायी जाएगी।

इसके असफल के बाद क्रिप्स मिशन (1942) में निम्न प्रावधान थे :-

→ युद्ध के पश्चात् डोमिनियन स्टेटस पर विचार

→ कार्यकारी परिषद में भारतीयों को बहुमत तथा ~~a~~ युद्ध सलाहकारी परिषद का निर्माण

→ अल्पसंख्यकों संबंधित निर्णयों पर सहमति की आवश्यकता आदि

हालाँकि यह मिशन भी असफल रहा
कांग्रेस ने निम्न कारणों से अस्वीकार किया :-

→ इसमें वायसराय को केवल संवैधानिक प्रमुख बनाने संबंधी कोई प्रावधान नहीं था
→ समयावधि (डोमिनियन दर्जा) का न होना।
→ संवैधानिक सभा के निर्माण में कांग्रेस की मांग का सम्मिलित न होना।
→ गवर्नर का उत्तरदायी न होना आदि।

मुस्लिम लीग द्वारा निम्न कारण से अस्वीकृत :-

→ पृथक् पाकिस्तान के रूप में कोई प्रावधान नहीं
→ मुस्लिम प्रतिनिधित्व हेतु केवल मुस्लिम लीग संबंधी प्रावधान का अभाव
→ केन्द्रीय विधानपरिषद में मुस्लिमों की संख्या 1/3rd के प्रावधान का अभाव आदि।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस प्रकार से क्रिप्स मिशन की असफलता तथा इसके पश्चात 'भारत छोड़ो आंदोलन' ने आगामी रणनीति द्वारा स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

VISION IAS™

18. Though India as a whole had been ruled by some emperors in the past, it was only in the 19th century that the concept of national identity and national consciousness emerged. Examine. (250 words) 15

यद्यपि अतीत में कुछ सम्राटों का संपूर्ण भारत पर शासन रहा था, तथापि कहीं जाकर 19वीं शताब्दी में ही राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा उभरी। परीक्षण कीजिए।

प्राचीन ताम्रपाषाणिक काल में मौर्य वंश के शासक अशोक सम्राट प्रथम शासक था जिसने लगभग संपूर्ण भारत पर शासन किया था।

उसके पश्चात् मध्यकालीन समय में औरंगजेब ने करीब संपूर्ण भारत पर शासन किया।

परन्तु राष्ट्रीय पहचान व चेतना 19 वीं शताब्दी में अवधारित हुई जिसके निम्न कारण थे :-

→ आधुनिक विचारों का प्रादुर्भाव जैसे- तर्कवाद, बुद्धिवाद आधारित पाश्चात्य पुर्नजागरण से भारतीय पुर्नजागरणवाद का उदय

→ आधुनिक सिद्धांतो यथा- फ्रांसीसी क्रांति से समता, स्वतन्त्रता तथा बंधुत्व का प्रतिपादन।

इसने भारतीयों को स्वराज्य हेतु प्रेरित किया।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ आधुनिक दार्शनिकों के विचार जैसे- मॉन्टेस्क्यू का शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत या स्वामी विवेकानंद का विवेक का सिद्धांत।

→ प्राचीन काल में प्रेस व साहित्य के अभाव ने संन्चरण को सीमित किया जबकि 19वीं शताब्दी में 1853 में रेल की शुरूआत, टेलीग्राफ की शुरूआत आदि ने परिवहन तथा संपर्क में वृद्धि की।

→ सामाजिक आंदोलनों जैसे- सोशल कांफ्रेंस लीग आदि ने महिला अधिकारों व अस्पृश्यता पर प्रतिबंध के विचारों के प्रसार ने एकता की भावना को जाग्रत किया।

→ सामंतवाद के बाद उभरा पूंजीवादी साम्राज्यवाद के बारे में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार (दादाभाई नौरोजी का धन प्रेषण का सिद्धान्त)

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त ब्रिटिश आर्थिक शोषण तथा गरीबी व अकालों के कारण लाखों लोगों की जान गंवाना आदि से संबंधित एक समान राष्ट्रीय विचारधाराओं के जन्म ने राष्ट्रीय पहचान व चेतना को जागृत किया।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

19. The Marathas had the potential to develop into a new pan-India empire replacing the Mughals, but that potential was never fully realized because of the nature of the Maratha polity itself. Discuss. **(250 words) 15**

मराठों में मुगलों को प्रतिस्थापित कर एक नए अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में विकसित होने की क्षमता थी, लेकिन स्वयं मराठा राजव्यवस्था की प्रकृति के कारण यह क्षमता कभी पूर्णतः साकार नहीं हो पाई। चर्चा कीजिए।

सामंती व्यवस्था के अंतर्गत मुगलकाल में भारत अनेक छोटे-छोटे राजवंशों में विभाजित था। जैसे- इन्दौर के होलकर, पूना के पेशवा, ग्वालियर के सिंधिया तथा बड़ौदा के गायकवाड़।

ये सभी मराठी राज्य क्षेत्र से संबंधित थे।

मराठा की क्षमता जो एक अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में हो सकती थी :-

→ प्रशासनिक संरचना - महाराज शिवाजी के समय की न्याय व सरदेशमुखी ने प० भारत में मराठा साम्राज्य को अधिक स्थायित्व प्रदान करना

→ विशाल सेना → मराठों के पास सेना- घुड़सवार, हाथी तोप की संख्या भी अधिक थी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ क्षेत्रीय भावना तथा धार्मिक भावना द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर एकता की क्षमता
→ विशाल मानव जन समूह आदि।

परन्तु निम्न कारणों से यह क्षमता साकार नहीं हो पाई :-

→ राजव्यवस्था पदानुक्रम मे मतभेद - मराठा शिवाजी के उपरान्त आपस में पेशवा पद हेतु उलझ गए
→ एकीकृत संगठनात्मक शक्ति का अभाव
→ मुगलों व तत्पश्चात् अंग्रेजों की विस्तारवादी नीतियाँ तथा लालच प्रलोभ व स्वयं शासक की भावना से
→ सिंधिया तथा होल्कर ने मुगलों को समर्थन देकर उनकी अप्रत्यक्ष शक्ति को कमजोर किया आदि।

निष्कर्षत: यह कहना उचित होगा कि मराठा साम्राज्य की विशाल क्षमता के बावजूद नेतृत्वहीनता, लालच तथा गुटबाजी के कारण अखिल भारतीय पहचान बनाने में असफल रहा।

VISION IAS™

Don't write anything in this margin (इस स्थान में कुछ न लिखें)

20. The Revolt of 1857 led not to the downfall but to the consolidation of British Empire in India. In this context, bring out the changes in administrative structure and policies introduced by the British post 1857. (250 words) 15

1857 के विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के पतन का नहीं, अपितु समेकन का मार्ग प्रशस्त किया। इस संदर्भ में, 1857 के पश्चात् अंग्रेजों द्वारा प्रशासनिक संरचना और नीतियों में लाए गए परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए।

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप में 1857 की क्रांति विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक कारकों से सफल नहीं रही परन्तु इसने ब्रिटिश प्रशासनिक तंत्र पर व्यापक प्रभाव छोड़ा।

1857 की क्रांति ने निम्न प्रकार से ब्रिटिश साम्राज्य के समेकन का मार्ग प्रशस्त किया :-

→ इसने ब्रिटिश सरकार को कमजोरियों को मजबूत करने का अवसर दिया। (सेना, पुलिस का पुनर्गठन 1861 में)

→ प्रशासनिक ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन द्वारा भावी 100 वर्षों तक ब्रिटिश अनुकूल व्यापक साम्राज्य की नींव रखना आदि।

1857 की क्रांति के बाद प्रमुख परिवर्तन :-

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(i) प्रशासनिक संरचना में परिवर्तन :-

→ 1784 से शुरू द्वैध राजपद्धति (बोर्ड ऑफ डायरेक्टर तथा बोर्ड ऑफ कंट्रोल की समाप्ति)

→ भारत शासन अधि० 1858 द्वारा ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष शासन स्थापित करना

→ राज्य सचिव पद का सृजन

→ गवर्नर जनरल अब वॉयसराय

→ 15 सदस्यीय कार्यकारी परिषद

→ सेना पुनर्गठन (भारतीयों की संख्या कम कर दी गयी।)

→ सिविल सेवाओं पर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के वर्चस्व की समाप्ति आदि।

(ii) नीतियों में परिवर्तन :-

→ सहायक संधि (वैलेजली ने शुरू की थी) तथा अधिग्रहण का सिद्धांत (डलहौजी द्वारा) को समाप्त कर, भावी विस्तारवादी नीति को त्याग दिया गया।

→ नए प्रकार के आर्थिक पूंजीवाद द्वारा आर्थिक शोषण की नीति अपनायी गयी।

Scanned with CamScanner

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ बाँटो और राज करो की नीति (1857 में मुस्लिम को क्रांति का जनक जबकि 1907 में हिंदुओं को स्वराज्य आंदोलन का जनक माना गया)

→ प्रत्यक्ष रूप से धार्मिक व सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप (जैसे- ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई प्रसार व ईसाइयों हेतु निम्न टैक्स / लगान दर) आदि

अतः कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर 1857 की क्रांति ने भारतीयों को राजनीतिक रूप से जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं दूसरी ओर इसने ब्रिटिश सरकार को अधिक सजगता का अवसर प्रदान किया।

Scanned with CamScanner